

"मरदा-लिपि का एक -  
(शारदा लिपि का एक -

ऐतिहासिक परिचय

मरदा-लिपि के काल-निरणय

के परिप्रेक्ष्य में प्रायः सत्र दशक के -  
के परिप्रेक्ष्य में प्रायः सत्र दशक के  
प्रायः सत्र दशक के प्रायः सत्र दशक के  
प्रायः सत्र दशक के प्रायः सत्र दशक के  
लिपि के विद्युत् नेत्र अक्षरमय -  
लिपि के विद्युत् नेत्र अक्षरमय -

मानकर संशोधन कर लिया। लंका-महा-  
मानकर संशोधन कर लिया। लंका-महा-  
वंस" उपर कलम की शारदा-लिपि  
वंस" उपर कलम की शारदा-लिपि

के मातृ के अक्षर पर यत्नपूर्वक -  
के मातृ के अक्षर पर यत्नपूर्वक -  
के मातृ के अक्षर पर यत्नपूर्वक -  
के मातृ के अक्षर पर यत्नपूर्वक -

रंभ प्रचलन में माल के युग में -  
रंभ प्रचलन में माल के युग में -  
रंभ प्रचलन में माल के युग में -  
रंभ प्रचलन में माल के युग में -

कश्मीर की धाती में प्रायः सत्र दशक के -  
कश्मीर की धाती में प्रायः सत्र दशक के -  
कश्मीर की धाती में प्रायः सत्र दशक के -  
कश्मीर की धाती में प्रायः सत्र दशक के -

उक्त के अक्षर में मलय से। गणेश  
उक्त के अक्षर में मलय से। गणेश  
उक्त के अक्षर में मलय से। गणेश  
उक्त के अक्षर में मलय से। गणेश

के भाषा में शारदा-लिपि कश्मीर की धाती  
के भाषा में शारदा-लिपि कश्मीर की धाती  
के भाषा में शारदा-लिपि कश्मीर की धाती  
के भाषा में शारदा-लिपि कश्मीर की धाती

में कच की परिचित केसकी धाती पर  
में कच की परिचित केसकी धाती पर  
में कच की परिचित केसकी धाती पर  
में कच की परिचित केसकी धाती पर

मभूत की मरिचक के कलभुषण  
मभूत की मरिचक के कलभुषण  
मभूत की मरिचक के कलभुषण  
मभूत की मरिचक के कलभुषण

चांदनी-लिपि के अक्षरों की सरलकीय

मदारा धूप हुआ होगा। उम उष-

का वंति क्रमिक मृक गिलगित -

मैनमलिपु के धकसित छः ठगों में

बहुत मिलता है।

कुथाल-मभूरु का

सामन कसूर में सउके उक-

रका भुय है। मभूरु कनिष्क के

युग में की विमु रौरु-पद् की

रौरु-मंगीति का भुयराज कसूर

की धाटी के विविध भुले पाउषा

भुंराले पर मथत्र कुभुमठा के

अउ पर कुथाल-मभूरु के सामके

उपर रौरु-पद् के भुयादे ने

उभुपर, विधिरक उर वुडु के

धुवसने के चांदी की विकसित-

लिपि में उंचे के पटे पर उकर

लिपि में नौके के पटे पर उकर

कर मुद्रांकित सुन धर म्हाँप  
 कर हरकित स्थान पर दाँप  
 के बाप। राहुल मांहुडायन -  
 के महुड के किउंसी उअ-धर -  
 के उकेरने के भाऊ न विकसित  
 बाढी के मुणर पर सारदाकी  
 लिधि के रात्रु रिया है।

रीन के उँरु सभक  
 चीन के लॉड आरव

ने रंसी 383 में कमीर के गैउम -  
 संघदेव के भावर रीनदेस बुला-  
 कर सारदा लिधि में लिपे गूडे  
 के रीनी भाषा एवं लिधि में प्रमुड  
 करने का काढठार मेंथा। रंसा  
 की यैसीमडी के "लिठधा-र-सन" के  
 "अठिण्ड-केस में भुण्ड वसु-  
 चडु निवृद्ध, ठेकर लिपडे है:-  
 "कमीर वैठधिक नीडि सिद्ध:-  
 धाये मभायं कषिडेड ठिण्डु"  
 धाये मभायं कषिलेड सिधर्मः ५

उपरोक्त भाषा के सुचारु  
नियमों के आधार

पर निश्चय यह निकल चुका है कि -  
पर निश्चय यह निकल आता है कि -

भारत लिपि का अमूर्त भूत -  
भारत लिपि का अमूर्त भूत -

वसुधैव कुटुम्बकम् के युग में मनुष्य प्रचवर्ती  
वसुधैव कुटुम्बकम् के युग से सुदूर पूर्ववर्ती

अभय रक्षा होगा।  
अभय रक्षा होगा।

स्थान रोम के टेरमुनी  
जापान देश के टेरमुनी

विचार के परिभर के संस्कृत में  
विचार के परिभर के संस्कृत में

"ध्वनिक विषय परिभाषा" के प्रारम्भ में  
"ध्वनिक विषय परिभाषा" के प्रारम्भ में

कभूत की भारत बलभाला उप-  
कभूत की भारत बलभाला उप-

लक्ष्य करे है और इस का कालनिर्यात  
लक्ष्य करे है और इस का कालनिर्यात

रंभा की पंचवीं सती का उद्घाटन  
रंभा की पंचवीं सती का उद्घाटन

गया है। भाषा में अर्थोपरिभाषा "कुशल-  
गया है। भाषा में अर्थोपरिभाषा "कुशल-

भाषा" की अन्तर्भाव्य संगोष्ठी के  
भाषा" की अन्तर्भाव्य संगोष्ठी के

परिभाषा में प्रो. (डॉ०) गुरु ने -  
परिभाषा में प्रो. (डॉ०) गुरु ने -

भारत (Tebacotta) के उद्घाटन -  
भारत (Tebacotta) के उद्घाटन -

(Artifect) पर अंकित भारत लिपिक  
(Artifect) पर अंकित भारत लिपिक

भारत का प्रसन्न करके इसका अभय  
भारत का प्रसन्न करके इसका अभय

रंभा की सुमरी मडी का देना -  
ईसा की दूसरी शती का होना  
धार्मिक ठहराया है।  
प्राकृतिक ठहराया है।

सीन रोम के महान  
सीन देना के महान  
वैशु ठिकु दु दुा दु ने अथने  
कौ से (मैकु) से लु न्हाइ ने अथने

कभीर सुवाम के रो वरु रिम  
कभीर सुवाम के रो वरु रिम  
सौ ने च विठार के गुडुगार में  
सौ ने च विठार के गुडुगार में  
विठारों उम गुडुगार के धुमुके की  
विठारों उम गुडुगार के धुमुके की  
लिथि मारदा की थी, उम का -  
लिथि मारदा की थी, उम का -  
मंकेउ ठिकु दु दुा दु ने अथने याइ  
मंकेउ ठिकु दु दुा दु ने अथने याइ  
विवरण में धुमुउ कबं चार किया है।  
विवरण में धुमुउ कबं चार किया है।

कभीर सैवागम के महान  
कभीर सैवागम के महान  
ठाधुकार अयाद कौमराराने रंभा की  
ठाधुकार अयाद कौमराराने रंभा की  
गुारदवी मडी में उम उधु के मधु  
गुारदवी मडी में उम उधु के मधु  
किया है कि सिवमुइ रिम संकरथल  
किया है कि सिवमुइ रिम संकरथल  
( संकर-उदुल ) अथवा सादुन थर  
( संकर-उदुल ) अथवा सादुन थर  
उकेर मिले से, वरु लिथि ठी मारदा  
उकेर मिले से, वरु लिथि ठी मारदा -  
की रदी है।

रंभी गारुकी मडी की

"इसी गारुकी शती की"

भक्ति में अलक्ति रू पुस्तक के लेखक

अलक्ति ने अपनी पुस्तक में भारवा

लिपि की विमल प्रसंसा की है और

लिपि की निजव इतिहास की है और

लिपि है कि कभीरी रानमानस -

उस लिपि को शब्द से "उत्तम लिपि"

के नाम से बुलाते हैं।

भारवा लिपि ने धुठू के

शब्द लिपि ने धुठू के

कारण क रं एक लिपि के रान

दिया है, उनमें धुभाप है :- उच्चरी, -

वे रू, गुरुभाषी, टाकरी, धांचरी -

उत्तर ही रम-रक उचलिपियां हैं।

और भी दस-एक उचलिपियां हैं।

भारवा लिपि या उसके -

भारवा लिपि या उसके -

पूर्ववती राद्री एवं यथेष्टी के -

अधिकार मिलालाप (Rock-inscription)

उत्तर मध्ययुग के इतिहासकार -

रंनरारा एवं मीवर के कथन के

जोनराज एवं शीवर के कथन के

अनुभार निरुपयुक्त विवरणियां  
अनुभार निर्देशन से विनय किए गए।

भारत के रठ-भठे सिलालाप  
भारत के रहे - छहे सिलालाप

पसिमी-यंरुच, रिष्ठी, किभावल पु-  
व किमी-यंजल, दिष्ठी, दिभाचल पु-

रुम, लडुगप उठर कसुीर के  
वेम, लडुगप, उठर कसुीर के

ठिच-ठिच भुंयले धर मिले ठं।  
ठिच-ठिच अंचले धर मिले हैं।

भारत लिथिक उडिठाम  
भारत लिथिक उडिठाम

रे कसुीर वरु धुसीन ठं।  
रे कसुीर वरु धुसीन ठं।

रुमिका लपक  
(रुमिका लपक)

दिल्लीनाथ गंज,  
दिल्लीनाथ गंज

मडु-सुनगर,  
मडु-सुनगर

कसुीर.  
कसुीर.